इकाई 1 भारत की प्रमुख भाषाएँ और भाषा परिवार : आधुनिक भारतीय भाषाओं का परिचय और विकास

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- भाषा-परिवारों की संकल्पना के विषय में बता सकेंगे;
- भाषाओं के वर्गीकरण की समस्या का उल्लेख कर सकेंगे;
- प्रमुख भारतीय भाषा-परिवारों और भाषाओं के सामान्य स्वरूप का परिचय दे सकेंगे;
- भारोपीय भाषा-परिवार की प्रमुख भारतीय भाषाओं के ऐतिहासिक विकास का परिचय दे सकेंगे; तथा
- द्रविड़ भाषा-परिवार की प्रमुख भारतीय भाषाओं के ऐतिहासिक विकास का परिचय दे सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

भारत अनेक भाषाओं का देश है। किंतु अनेक होते हुए भी एक-दूसरे से पूरी तरह से भिन्न नहीं हैं। इन भाषाओं की गहरी समझ अनुवादक को लिए कई तरह से उपयोगी है। अतः इस इकाई में हम भारतीय भाषाओं की प्रकृति, संरचना और इतिहास का परिचय प्राप्त करेंगे। अधिकांश भारतीय भाषाएँ विश्व के दो विशाल भाषा-परिवारों से संबंध रखती हैं, भारोपीय और द्रविड़। इन दो परिवारों के अतिरिक्त ऑस्ट्रो-एशियाई (मुंडा) और चीनी-तिब्बती परिवार की भाषाएँ भी भारत में बोली जाती हैं। अतः इस इकाई में भाषा परिवारों की व्याख्या और एक परिवार की भाषाओं के बीच संबंध का परिचय दिया गया है। इसके पश्चात भारतीय भाषाओं के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल सभी भाषाओं का संक्षिप्त विवरण भी दिया गया है।

1.2 भाषा-परिवारों की संकल्पना

1.2.1 भाषा-परिवार

"भाषा-परिवार" शब्द पढ़ कर थोड़ी देर के लिए आपको आश्चर्य हो सकता है कि भाषा का भी परिवार हो सकता है क्या? दुनिया भर की भाषाओं को समानता के कुछ तत्वों के आधार पर समूहों में वर्गीकृत करके उनके विकास का अध्ययन करने की सुविधा के लिए उन्हें कुछ भाषा-परिवारों में विभाजित किया गया है। परिवारों को भी विभिन्न शाखाओं में वर्गीकृत किया गया है।

कहा जाता है कि वर्तमान समय में विश्व में लगभग 6000 भाषाएँ हैं। विश्व की भाषाओं के इतिहास की वैज्ञानिक खोज के प्रारंभिक प्रयास 18वीं शताब्दी के अंत में किए गए थे। भाषाशास्त्रियों (तुलनात्मक ऐतिहासिक प्रक्रिया का अनुसरण करने वाले विद्वानों) ने भाषा समूहों का क्रमबद्ध और विस्तारपूर्वक अध्ययन आरंभ किया। उन्होंने यह पता करने का प्रयास कि उनके बीच समानताएँ थीं कि नहीं। यदि इन समानताओं का प्रदर्शन हो सकता तो यह निष्कर्ष निकलता कि भाषाएँ एक-दूसरे से संबंधित थीं। एक ही परिवार की भाषाओं का विकास एक समान स्रोत – प्राग् भाषा (आदि भाषा) – से हुआ हालाँकि वर्तमान समय में वह प्राग् भाषा अस्तित्व में नहीं है।

यूरोप में भाषाओं के समूहों के समान उद्भव के प्रमाण आसानी से उपलब्ध थे। उदाहरणस्वरूप, इस बात की पुष्टि हो गई थी कि फ्रांसीसी, स्पैनिश, इतालवी एवं अन्य कुछ रोमांस भाषाओं का उद्भव लातीनी (लैटिन) से हुआ। ये सभी रोमांस भाषाएँ कहलाती हैं। इसी प्रकार अनेक आधुनिक भाषाओं का अध्ययन किया गया और वही विवेचन भाषाओं के विशालतर समूहों पर लागू किया गया। इसके फलस्वरूप 19वीं शताब्दी के आरंभ में भाषाशास्त्री यह प्रमाणित कर पाए कि किसी समय में एक मूल (प्राग्) भाषा थी जिससे यूरेशिया की कई भाषाओं का विकास हुआ। इस प्राग् भाषा को "प्राग् भारोपीय" कहा गया। इसी तकनीक का प्रयोग करते हुए अन्य भाषा समूहों का भी अध्ययन किया गया।

मानव समाज में व्यक्ति परिवार का हिस्सा होता है। परिवार में पिता और माँ होते हैं और बच्चे एक-दूसरे के भाई-बहन होते हैं। ये शब्द – पिता, माता, बहन, भाई इत्यादि बंधुतावाची शब्द कहलाते हैं। उन्हें रिश्ते की शब्दावली भी कहा जाता है। इन शब्दों – विशेषकर माँ एवं बहन – का भाषाओं के बीच संबंधों को दर्शाने के लिए प्रयोग किया जाता है। यदि अनेक भाषाएँ एक आदि भाषा से जन्मी हैं तो उन्हें माँ कही जाने वाली आदि भाषा की बेटियाँ कहा जाता है। उदाहरणस्वरूप, रोमांस परिवार में लैटिन मूल भाषा है। फ्रांसीसी, स्पैनिश इत्यादि का जन्म लैटिन से हुआ है। इसलिए स्पैनिश भाषा फ्रांसीसी भाषा की बहन है। विशाल भाषा समूहों के साथ भी यही तरीका अपनाया जाता है। विशाल मानव परिवारों की भाँति यहाँ भी उप-परिवार अथवा शाखाएँ हैं। उदाहरण के लिए, जर्मेनिक और भारतीय-ईरानी भारोपीय भाषा-परिवार की शाखाएँ हैं।

मूल वंश से अनेक स्वतंत्र भाषाओं के उद्भव के बारे में मुख्यतः दो सिद्धांत हैं। ये हैं -- "लहर सिद्धांत" और "वंशवृक्ष सिद्धांत"। यहाँ पर "लहर" शब्द एक रूपक के तौर पर प्रयुक्त किया गया है। यदि शांत जल में हम पत्थर का एक टुकड़ा फेंके तो छोटी-छोटी लहरें उठती हैं। ये लहरें दूर-दूर तक फैलकर किनारों पर कमजोर पड़ जाती है। दूरतम स्थान पर लहर सबसे कमजोर होगी और पत्थर द्वारा पैदा की गई मूल लहर से इसका सुदूर संबंध होगा। कभी-कभी हमारे लिए इनका आपसी संबंध बताना भी कठिन होता है क्योंकि ये एक-दूसरे से बहुत दूर होती हैं। दूसरा सिद्धांत आदि भाषा और उसके वंशजों के बीच निरंतर द्विशाखन की बात करता है। मान लीजिए कि एक माता-पिता की दो संतानें हैं। इन दोनों संतानों की अपनी संतानें हैं जो मूल माता-पिता के पौत्र/पौत्री हैं। पौत्र/पौत्री का अपने दादा-दादी और नाना-नानी से आनुवांशिक संबंध है। लेकिन उनकी अपनी व्यक्तिगत विशेषताएँ एक समान नहीं होंगी। बाहरी प्रभाव के फलस्वरूप पौत्र-पौत्री का अपना व्यक्तित्व होगा। इसी प्रकार भाषाओं में भी मूल भाषा से संबंधित होने के बावजूद अपनी विशेषताएँ होती हैं और वे नई भाषा का स्थान पाती हैं।

1.2.2 विश्व के भाषा-परिवार

विश्व के प्रमुख भाषा-परिवारों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है :

1. भारोपीय भाषा-परिवार

विद्वानों द्वारा भारोपीय नाम उस भाषा परिवार को दिया गया है जो पहले-पहल यूरोप और दक्षिण एशिया के अनेक भागों में फैला। माना जाता है कि मूल भाषा, जिसे आमतौर पर प्राग् भारोपीय कहा जाता है, संभवतः सन् 3000 ईसा पूर्व में बोली जाती होगी। इसके बाद की सहस्राब्दि में इसका

विभिन्न भाषाओं में विभाजन हो गया। भारोपीय की मुख्य शाखाएँ हैं : (1) अल्बानियाई, (2) अनातोलियाई, (3) आर्मीनियाई, (4) स्लाव, (5) वाल्टिक, (6) जर्मेनिक, (7) यूनानी, (8) भारतीय-ईरानी, (9) रोमांस, (10) तोखारी।

2. यूरालिक भाषा-परिवार

यूरालिक भाषा-परिवार में 30 से भी अधिक भाषाएँ हैं जो प्राग् यूरालिक परिवार के वंशज हैं जिसे 7000 वर्ष से भी अधिक समय पूर्व रूस के उत्तर यूराल पर्वत क्षेत्र में बोला जाता था।

3. पुरा-साइबेरियाई भाषा-परिवार

पुरा-साइबेरियाई परिवार में शामिल भाषाओं को अब मात्र कुछ हजार लोग ही बोलते हैं, जो उत्तर-पूर्वी साइबेरिया में फैले हुए हैं। इन भाषाओं को चार समूहों में वर्गीकृत किया गया है। हालाँकि भाषाविद् 19वीं शताब्दी से इन भाषाओं का अध्ययन "पुरा साइबेरियाई" विषय के अंतर्गत करते आ रहे हैं लेकिन भाषाई दृष्टि से वास्तव में इन सभी भाषाओं की उत्पत्ति समान नहीं है।

4. अल्ताइ भाषा-परिवार

अल्ताइ भाषा परिवार बल्ख प्रायद्वीप से लेकर उत्तर-पूर्वी एशिया तक एक विशाल क्षेत्र में फैला है। इस क्षेत्र में मध्य एशिया का अल्ताइ पर्वत क्षेत्र शामिल है जहाँ से इस भाषा को उसका नाम मिला। इसकी लगभग 60 भाषाएँ तीन समूहों में वर्गीकृत हैं – तुर्की, मंगोलियाई और तुंगुस।

5. द्रविड़

द्रविड़ परिवार लगभग 30 भाषाओं का समूह है। इस परिवार की अधिकांश भाषाएँ भारत के दक्षिणी और पूर्वी हिस्सों में बोली जाती है, हालाँकि एक भाषा – ब्राहुई – उत्तरी पाकिस्तान में बोली जाती है।

6. ऑस्ट्रो-एशियाई भाषा-परिवार

ऑस्ट्रो-एशियाई परिवार की अधिकांश भाषाएँ चीन और इंडोनेशिया के बीच के दक्षिण-पूर्वी देशों तथा भारत में बोली जाती हैं।

7. चीनी-तिब्बती भाषा-परिवार

चीनी-तिब्बती परिवार में विभिन्न चीनी भाषाएँ (चीन और ताइवान में 100 करोड़ (1 अरब) से भी अधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली), बर्मी, तिब्बती, वियतनामी, थाई तथा अन्य भाषाएँ शामिल हैं। म्यांमार में करीब 2.2 करोड़ लोग बर्मी बोलते हैं। तिब्बती बोलने वालो की संख्या लगभग 40 लाख है।

8. नाइजर-कोंगो भाषा-परिवार

नाइजर-कोंगो अफ्रीका का विशालतम भाषा-परिवार है जिसमें लगभग 1350 भाषाएँ हैं जो नील नदी के पश्चिम में सहारा रेगिस्तान के नीचे आने वाले अफ्रीका (Sub Saharan Africa) में बोली जाती हैं।

9. नील-सहारा भाषा-परिवार

इस परिवार की प्रमुख भाषाएँ चारी और नील नदियों के ऊपरी हिस्सों के इर्द-गिर्द बोली जाती हैं। इस समूह को मुख्यतः चारी-नील नाम से जाना जाता है। इसमें लगभग 180 भाषाएँ हैं।

10. खोइसान भाषा-परिवार

यह अफ्रीका का सबसे छोटा भाषा परिवार है जिसमें 40 से भी कम भाषाएँ हैं जिन्हें लगभग 3 लाख लोग बोलते हैं। इन्हें अफ्रीका के दक्षिणी भागों – कालाहारी मरुक्षेत्र के इर्द-गिर्द एक हिस्सा जो अंगोला से लेकर दक्षिण अफ्रीका तक फैला हुआ है – में बोला जाता है।

11. ऑस्ट्रोनेशियन भाषा-परिवार

ऑस्ट्रोनेशियन भाषा-परिवार मैडागास्कर से लेकर ईस्टर द्वीप और ताइवान और हवाई से लेकर न्यूज़ीलैंड तक एक विशाल क्षेत्र में फैला हुआ है। इस परिवार को मलय-पॉलीनेशियाई का नाम भी दिया गया है। इसे बोलने वालों और भाषाओं की संख्या के हिसाब से यह विश्व के विशालतम भाषा-परिवारों में से एक है।

12. भारत-प्रशांत भाषा-परिवार

भारत-प्रशांत भाषा परिवार में निम्नलिखित भाषा समूह शामिल हैं :

(क) न्यू गिनी में बोली जाने वाली लगभग 650 भाषाएँ जो ऑस्ट्रोनेशियन परिवार का हिस्सा नहीं हैं।

(ख) न्यू गिनी के निकटस्थ पूर्व और पश्चिम के द्वीपों में बोली जाने वाली 100 भाषाएँ।

(ग) दो अन्य लघु भाषा समूह – अंडमानी और तस्मानियाई – जो न्यू गिनी क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषाओं से भौगोलिक दृष्टि से बहुत दूर हैं।

13. उत्तर और दक्षिण अमरीका की भाषाएँ

हाल के एक वर्गीकरण में अमरीकी महाद्वीप की सभी भाषाओं को तीन परिवारों में वर्गीकृत किया गया है : (1) ना देने, (2) एस्किमो-एलियुट, (3) अमेरिंड।

14. ऑस्ट्रेलियाई आदिम भाषाएँ

ऑस्ट्रेलिया के अनेक भागों से जिन 250 भाषाओं के प्रमाण मिले हैं उनमें से केवल पाँच भाषाओं के 1000 से अधिक बोलने वाले हैं। कम से कम आधी से ज्यादा भाषाएँ लगभग विलुप्त हो गई हैं।

ऑस्ट्रेलिया की आदिम भाषाओं को 28 परिवारों में बाँटा गया है। केवल एक (पामा-न्यूंगन) के अलावा बाकी सभी भाषाएँ पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के उत्तरी भागों, उत्तरी क्षेत्र और क्वींज़लैंड में बोली जाती हैं। पामा-न्यूंगन ऑस्ट्रेलियाई महाद्वीप के बाकी हिस्सों में बोली जाती है।

उपरोक्त भाषाओं के अतिरिक्त कुछ भाषाएँ ऐसी भी हैं जो किसी विशेष भाषा-परिवार का हिस्सा नहीं हैं (उदाहरण के लिए, कोरियाई और जापानी)।

1.2.3 वर्गीकरण की समस्या

विश्व-भर में हजारों भाषाएँ हैं। हम उन्हें वर्गीकृत कैसे कर सकते हैं? यदि उनका वर्गीकरण संभव है तो इसके लिए हम क्या प्रक्रिया अपनाएँगे? वर्गीकरण की निम्नलिखित प्रमुख पद्धतियाँ हैं :

1. उत्पत्तिमूलक वर्गीकरण, जो उद्गम पर आधारित है।
2. प्ररूपात्मक वर्गीकरण, जो भाषाओं के बीच प्ररूपगत समानताओं पर आधारित है।

आधुनिक भाषा-विषयक अध्ययनों में एक अत्यंत महत्वपूर्ण अवधारणा है भाषिक सार्वभौमिकता की। भाषा की सार्वभौमिकता की खोज के संबंध में उसका प्ररूपात्मक पक्ष भी महत्वपूर्ण होता है। लेकिन ऊपर दी गई वर्गीकरण की पद्धतियों में कुछ कमियाँ भी हैं। भाषा के प्रारंभिक प्ररूपविज्ञानियों ने डार्विन का अनुसरण करते हुए भाषाओं की भी विकासमूलक व्याख्या की। उदाहरण के लिए, वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि वियोगात्मक भाषाएँ विभक्ति प्रधान भाषाओं की अपेक्षा कम विकसित हैं। आगे जाकर उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि एक विशेष प्रकार की भाषाएँ अनिवार्य रूप से भौगोलिक क्षेत्रों और एक विशेष मानवजातीय या सांस्कृतिक समूह का हिस्सा हैं। ऐसा लगता है कि वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि वियोगात्मक भाषाएँ और विभक्ति प्रधान भाषाएँ एक-दूसरे से बिल्कुल अलग हैं और उनमें कोई समानता नहीं है। वे इस तथ्य को भूल गए कि ऊपर दिए गए भाषा प्रकारों में से किसी का भी "विशुद्ध" उदाहरण उपलब्ध नहीं है।

प्ररूपात्मक वर्गीकरण की सफलता या असफलता इस बात पर निर्भर करती है कि हम वर्गीकरण का आधार बनने वाले अवयवों का किस प्रकार आकलन करते हैं। रूप विज्ञान (शब्द-संरचना) पर ही हमेशा अत्यधिक जोर दिया गया है। लेकिन हमें यह याद रखना चाहिए कि वाक्य-विन्यास, स्वनिमविज्ञान, भाषा-योग जैसे अन्य अवयव भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। जब हम इन सारे अवयवों पर नजर डालते हैं तो प्ररूपात्मक वर्गीकरण की अपर्याप्तता स्पष्ट हो जाती है। हम इस निष्कर्ष पर कैसे पहुँचें कि कौन से मापदंड सबसे महत्वपूर्ण हैं? डेविड क्रिस्टल का प्रश्न है : यदि दो भाषाओं की स्वनिमिक संरचना में 90% समानता है और व्याकरण में 50% समानता है तो क्या वे उन दो भाषाओं की तुलना में एक दूसरे के ज्यादा करीब हैं जिनकी स्वनिमिक संरचना में 50% और व्याकरण में 90% समानता है? क्रिस्टल स्वयं इस प्रश्न का उत्तर देते हैं - "भाषाविज्ञान के पास इस प्रकार के प्रश्नों का स्पष्ट उत्तर मौजूद नहीं है।"

प्ररूपात्मक और उत्पत्तिमूलक वर्गीकरणों की सबसे बड़ी कमी यह है कि वे भाषाओं के बीच सांस्कृतिक संबंधों के महत्वको भूल जाते हैं – यह तथ्य कि भाषाएँ एक-दूसरे के संपर्क में आने पर एक-दूसरे से प्रभावित होती हैं (मुख्यतः एक-दूसरे से शब्दों के आदान-प्रदान के कारण)। अक्सर यह देखा गया है कि जिन भाषाओं का कोई ऐतिहासिक संबंध नहीं होता वे भी आपसी संपर्क के कारण एक ही परिवार की सदस्य प्रतीत हो सकती हैं। इसके विपरीत एक और बात हो सकती है। संभावित भाषाएँ एक-दूसरे से इतना प्रभावित हो सकती हैं कि समानताओं की तुलना में असमानताएँ ज्यादा स्पष्ट हों। भारोपीय जैसे अनेक भाषा-परिवारों के अध्ययन में एक वास्तविक समस्या सांस्कृतिक संबंध की है। अक्सर यह स्पष्ट

नहीं होता कि दो भाषाएँ इसलिए समान हैं क्योंकि उनका उद्भव समान है या इसलिए कि उन्होंने एक-दूसरे से बहुत कुछ ग्रहण किया है।

हाल ही में एक पद्धति जो उभरी है, वह है -- भाषाओं को विशिष्ट संरचनात्मक मानदंडों के अनुसार वर्गीकृत करना। एक तरीका है शब्द में रूपिमों की संख्याओं के अनुसार भाषाओं का वर्गीकरण (जिसे संश्लेषण का सूचकांक कहा गया है)। इस प्रकार अनेक व्याकरणिक अनुपातों को देखकर भाषाओं के विभिन्न प्ररूप निर्धारित किए जा सकते हैं।

1.2.4 तुलनात्मक पद्धति

भाषाशास्त्र (भाषा के अध्ययन की तुलनात्मक ऐतिहासिक पद्धति) में तुलनात्मक पद्धति के द्वारा विभिन्न भाषाओं के बीच ऐतिहासिक संबंध का अध्ययन किया जाता है। भाषाविद् इसकी शुरुआत भाषाओं के एक समूह के बीच विधिवत् समानताओं और असमानताओं की पहचान से करते हैं और विकास के प्रारंभिक पड़ाव की पहचान का प्रयास करते हैं जिससे सभी स्वरूपों का उद्गम हुआ। इस प्रक्रिया को आंतरिक पुनर्निर्माण (internal reconstruction) कहते हैं। जब अनेक भाषाओं के समान पूर्वज होते हैं, यानी उनका विकास समान स्रोतों से हुआ होता है, तो उन भाषाओं को सजातीय भाषाएँ कहते हैं। उदाहरणार्थ, तमिल, तेलुगु, कन्नड़ व मलयालम की पूर्वज भाषा है, प्राग् द्रविड़। इसलिए वे एक-दूसरे की सजातीय हैं। भाषाविज्ञान में सजातीय शब्द का प्रयोग ऐसे शब्दों के लिए किया जाता है जिनकी भाषाई उत्पत्ति समान स्रोत से हुई है। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी शब्द **फ़ादर** का सजातीय शब्द जर्मन में **फ़ाटेर** और लैटिन में **पातेर** (Pater) है।

ऊपर दिया गया उदाहरण (**पातेर** शब्द) तो अपने आप में स्पष्ट है क्योंकि लैटिन के हमारे पास इसके लिखित दस्तावेज़ हैं। मूल भाषा का कोई लिखित प्रमाण न होने पर भी अन्य भाषाओं के उपलब्ध शब्दों की तुलना करके प्राग् भाषा के शब्दों का पुनर्निर्माण किया जाता है। इनमें से कछ शब्द कल्पित होते हैं और इसलिए उनसे पूर्व तारक चिह्न (*) लगा दिया जाता है। इस तरह लैटिन, ग्रीक, संस्कृत, वेल्श इत्यादि के स्वरूपों की तुलना करके भारोपीय स्वरूप *Pater का पुनर्निर्माण किया गया। इन पुनर्निर्मित स्वरूपों का सही उच्चारण बहस का मुद्दा है। कुछ विद्वान इन स्वरूपों को ध्वन्यात्मक महत्व देते हैं और उनका इस प्रकार उच्चारण करते हैं मानो वे वास्तविक भाषा का हिस्सा हों। अन्य लोग कहते हैं कि ये स्वरूप केवल सामान्य नियम हैं।

1.2.5 भाषागत वर्गीकरण के प्रकार

भाषाओं का वर्गीकरण दो प्रकार से किया जाता है -- (1) उत्पत्तिमूलक (वंशमूलक) प्रणाली; और (2) प्ररूपमूलक प्रणाली। भाषाविद् इन दोनों प्रणालियों का प्रयोग करते हैं। लेकिन उत्पत्तिमूलक प्रणाली पर ज्यादा खोज हुई है और इसकी कार्य प्रणाली और संदर्भ का ढाँचा बेहतर विकसित है। एक तीसरा तरीका भी है – वर्गीकरण की क्षेत्रीय प्रणाली।

1. उत्पत्तिमूलक प्रणाली

उत्पत्तिमूलक प्रणाली ऐतिहासिक प्रणाली के समान है जो इस पूर्वधारणा पर आधारित है कि भाषाओं की उत्पत्ति एक समान पूर्वज से हुई है। प्राचीन लिखित अवशेष तथ्य का काम करते हैं। लिखित तथ्यों के अभाव में तुलनात्मक प्रक्रिया का प्रयोग करते हुए निष्कर्ष निकाले जाते हैं ताकि मूल भाषा के स्वरूप का पुनर्निर्माण किया जा सके। अठारहवीं शताब्दी के अंत में प्रवर्तित इस प्रक्रिया का व्यापक प्रयोग किया गया है। यह प्रणाली विशेष रूप से यूरेशिया में सफल रही है जहाँ से प्राचीन और लुप्त भाषाओं के अनेक लिखित अवशेष प्राप्त हुए हैं। विश्व के अधिकांश अन्य हिस्सों में जहाँ से ऐसे दस्तावेज़ प्राप्त नहीं हुए हैं भाषाओं के वर्गीकरण की प्रक्रिया उतनी सटीक नहीं है।

2. प्ररूपमूलक प्रणाली

भाषाओं के बीच सुस्पष्ट समानताओं के आधार पर भाषाविदों ने तीन मुख्य भाषाई प्रकार निर्धारित किए हैं जो शब्दों की संरचना के प्रकार पर आधारित है। यहाँ पर स्वनविज्ञान, व्याकरण या शब्दावली के आधार पर भाषा के संरचनात्मक प्ररूप को ध्यान में रखा जाता है। उदाहरण के लिए, स्वरों की संख्या, स्वरों और व्यंजनों की विशेषताओं, विशेष ध्वनियों का प्रयोग, स्वराघात का प्रयोग भी प्ररूपमूलक वर्गीकरण का आधार हो सकते हैं।

वाक्य में पदों के क्रम – पद-क्रम – के आधार पर भी भाषाओं का वर्गीकरण किया जाता है। सामान्यतः पद-क्रम के दो प्रकार हैं – कर्म-कर्ता-क्रिया (SOV); और कर्ता-क्रिया-कर्म (SVO)।

प्रारंभिक वर्गीकरण रूपविज्ञान को आधार बना कर किया गया। उन्नीसवीं शताब्दी में श्लेगेल व अन्य भाषाविदों द्वारा प्रस्तावित इन वर्गीकरणों के तीन भाषाई प्रकारों का परिचय आगे दिया जा रहा है।

(क) **वियोगात्मक भाषाएँ :** इन भाषाओं में सभी शब्द अपरिवर्तित रहते हैं। व्याकरणिक संबंध शब्द-क्रम (पद-क्रम) के प्रयोग के आधार पर दिखाए जाते हैं। चीनी, वियतनामी भाषाएँ इस वर्ग में आती हैं।

(ख) **विभक्ति प्रधान भाषाएँ :** इन भाषाओं में शब्दों की आंतरिक संरचना में परिवर्तन कर व्याकरणिक संबंधों की अभिव्यक्ति की जाती है। इसके लिए विभक्तियों का प्रयोग किया जाता है जो एक बार में अनेक व्याकरणिक अर्थों की अभिव्यक्ति करती हैं। लैटिन, यूनानी (ग्रीक), संस्कृत और अरबी ऐसी भाषाओं के उदाहरण हैं।

(ग) **योगात्मक भाषाएँ :** इस प्रकार की भाषाओं में प्रत्येक व्याकरणिक अर्थ के लिए अलग इकाइयों – उपसर्गों या प्रत्ययों का प्रयोग होता है। द्रविड़ भाषाएँ योगात्मक भाषाएँ हैं; तुर्की, हंगेरियन भी योगात्मक भाषाएँ हैं।

1.3 भारत के भाषा-परिवार

भारत में चार भाषा-परिवारों की भाषाएँ बोली जाती हैं :

1. भारोपीय
2. द्रविड़
3. मुंडा (ऑस्ट्रो-एशियाई)
4. चीनी-तिब्बती

1.3.1 भारत में बोली जाने वाली भारोपीय भाषाएँ

भारत में बोली जाने वाली भारोपीय भाषाएँ भारत-ईरानी शाखा में आती हैं। इसकी चार उप-शाखाएँ हैं -- आर्य, ईरानी, नूरिस्तानी और दरद।

भारत-ईरानी शाखा भारोपीय भाषाओं की विशालतम उप-शाखा है जिसे बोलने वालों की संख्या एक अरब से अधिक है जोकि यूरोप से लेकर पूर्वी भारत तक फैले हुए हैं।

आर्य भाषाओं में सबसे प्राचीन है -- वैदिक संस्कृत जिसमें वेदों की रचना हुई। लगभग चौथी शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर सन् 1100 ईसवी तक इसका शास्त्रीय स्वरूप प्रयोग में था। इस भाषा को संस्कृत कहा गया जिसका अर्थ है "परिष्कृत" ताकि इसे प्राकृत कहलाई जाने वाली अनेक देशी बोलियों से अलग किया जा सके। संस्कृत की लिपि देवनागरी है जोकि ब्राह्मी लिपि का एक परिष्कृत रूप है। अधिकांश भारतीय-आर्य भाषाएँ देवनागरी वर्णमाला के किसी रूपांतरित स्वरूप में लिखी जाती हैं।

उर्दू भाषा के लिए अरबी लिपि के परिवर्तित रूप का प्रयोग होता है। उर्दू की शब्दावली में अरबी, फारसी और तुर्की का प्रभाव अधिक है।

आज भारत में बोली जाने वाली आर्य भाषाओं में से कुछ के नाम इस प्रकार हैं -- हिंदी, उर्दू, ब्रज, अवधी, पंजाबी, सिंधी, नेपाली, मराठी, कोंकणी, असमिया, बांग्ला, उड़िया आदि।

1.3.2 द्रविड़

द्रविड़ एक विशाल भाषा-परिवार है। अनेक मानव-समूह इस शब्द से स्वयं की पहचान करते हैं। द्रविड़ भाषी लोगों की संख्या लगभग 25 करोड़ है जो भारत, उत्तरी श्रीलंका, मलयेशिया, सिंगापुर आदि देशों में दूर-दूर तक फैले हुए हैं। यह लगभग 30 भाषाओं का समूह है जिनमें से अधिकांश भारत के दक्षिणी हिस्सों में बोली जाती हैं। एक द्रविड़ भाषा (ब्राहुई) पाकिस्तान के उत्तर में बलूचिस्तान में बोली जाती है जो अपने मुख्य परिवार से 1000 मील दूर है। प्रमुख द्रविड़ भाषाओं – तमिल, कन्नड़ तेलुगु और मलयालम – के बोलने वाले उत्प्रवास के कारण संपूर्ण दक्षिण-पूर्व एशिया, अफ्रीका के पूर्वी और दक्षिणी क्षेत्र और विश्व के अनेक शहरों में भी रहते हैं। भाषा को बोलने वाले लोगों के आधार पर द्रविड़ परिवार विश्व के भाषा परिवारों में पाँचवें स्थान पर है।

द्रविड़ भाषाओं की तीन शाखाएँ हैं :

1. **उत्तरी** : ब्राहुई (बलूचिस्तान) और बंगाल और उड़ीसा की कुछ आदिवासी भाषाएँ।
2. **मध्य** : तेलुगु व कुछ आदिवासी भाषाएँ।
3. **दक्षिणी** : तमिल, मलयालम, तुळु, कन्नड़।

द्रविड़ परिवार की चार मुख्य भाषाएँ हैं – तमिल (5 करोड़ से अधिक), तेलुगु (5 करोड़), कन्नड़ (3 करोड़) और मलयालम (2.8 करोड़)। प्रत्येक भाषा की पहचान दक्षिण भारत में एक राज्य से की जा सकती है : आंध्र प्रदेश - तेलुगु; तमिलनाडु - तमिल; कर्नाटक - कन्नड़; और केरल - मलयालम। चारों भाषाओं में तमिल का भौगोलिक विस्तार सबसे अधिक है जिसमें श्रीलंका, मलयेशिया, इंडोनेशिया, वियतनाम, पूर्व और दक्षिण प्रशांत महासागर के कई द्वीप शामिल हैं। कन्नड़ के लिखित दस्तावेज़ 5वीं शताब्दी ईसवी, तेलुगु के 7वीं शताब्दी और मलयालम के 9वीं शताब्दी ईसवी से प्राप्त हुए हैं। तमिल भाषा का समृद्ध इतिहास 5वीं और पहली शताब्दी ईसा पूर्व के समय का है। लेकिन सन् 450 ईसवी से पहले तमिल शिलालेखों का कोई उल्लेख नहीं है। चार प्रमुख द्रविड़ भाषाओं के अलावा अन्य द्रविड़ भाषाओं के नाम इस प्रकार हैं – गोंडी (20 लाख), ब्राहुई (17 लाख), कुडुग या ओराओं और तुळु, कुई आदि। द्रविड़ परिवार की बाकी भाषाओं को बोलने वालों की संख्या बहुत कम है। कुछ भाषाओं के बोलने वालों की संख्या मात्र कुछ हजार है।

1.3.3 मुंडा (ऑस्ट्रो-एशियाई)

मुंडा परिवार की भाषाएँ ऑस्ट्रो-एशियाई भाषा-परिवार का हिस्सा हैं। इस समूह की भाषाएँ मुख्यतः भारत के उत्तर-पूर्व में बोली जाती हैं। इन्हें भारत के कुछ मध्य क्षेत्रों में भी बोला जाता है। मुंडारी (8 लाख से भी अधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली) और संथाली (इसे लगभग 40 लाख लोग बोलते हैं) इस समूह की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाएँ हैं। भाषाओं के एक छोटे से उपसमूह (मुंडा समूह का हिस्सा) को बंगाल की खाड़ी में निकोबार द्वीपों में लगभग 20 हजार लोग बोलते हैं। लेकिन ये भाषाएँ ऑस्ट्रो-एशियाई परिवार की अलग निकोबारी शाखा मानी जाती हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि यह मॉन-ख्मेर का हिस्सा है जोकि ऑस्ट्रो-एशियाई परिवार की विशालतम शाखा है।

1.3.4 चीनी-तिब्बती

इस परिवार की निम्न भाषाएँ भारत में बोली जाती हैं - अंगामी (नागालैंड में), मणिपुरी (मणिपुर में), मिज़ो (मिज़ोरम में), बोडो (असम में), लेप्चा (सिक्किम में), लद्दाखी (लद्दाख में)। तिब्बती-चीनी परिवार में विभिन्न चीनी (चीन और ताइवान में 100 करोड़ (1 अरब) से भी अधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली) और बर्मी और तिब्बती शामिल हैं। म्यांमार में 2.2 करोड़ लोग बर्मी बोलते हैं। तिब्बती बोलने वालो की संख्या लगभग 40 लाख है।

1.4 भारतीय भाषाओं की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

1.4.1 संस्कृत

संस्कृत भारोपीय भाषा-परिवार की प्रमुख भाषाओं में से एक है। संस्कृत भाषा भारोपीय भाषा-परिवार की भारत-ईरानी शाखा में आती है। उत्तर भारत की प्रमुख आधुनिक भाषाएँ इसी से विकसित हुई हैं। भारतीय-आर्य भाषाओं के विकास को अक्सर तीन कालों में विभाजित किया जाता है : पुरातन, मध्यकालीन, आधुनिक।

पुरातन भारतीय-आर्य भाषा संस्कृत है। इसे मुख्यतः वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत के रूप में विभाजित किया गया है। पुरातन भारतीय-आर्य का प्रारंभिक लिखित रूप ऋग्वेद के मंत्रों में है जो कम से कम 100 ईसा पूर्व के समय से है। कालानुक्रम से ब्राह्मण ग्रंथों की भाषा ऋग्वेद की भाषा और शास्त्रीय संस्कृत के बीच आती है। ब्राह्मण ग्रंथ गद्य रचनाएँ हैं जिनमें वैदिक कर्मकांड की व्याख्या की गई है। प्रारंभिक ब्राह्मण ग्रंथ पहली सहस्राब्दि ईसा पूर्व के मध्य में लिखे गए थे। उपनिषद, ब्राह्मण साहित्य का हिस्सा हैं।

जब विद्वानों को वेदों को बिना किसी विकार के संप्रेषित करने की आवश्यकता महसूस हुई तो उन्होंने भाषाई विश्लेषण के सिद्धांतों का अध्ययन आरंभ कर उन्हें संस्कृत भाषा पर लागू किया। इससे एक व्याकरण का विकास हुआ जिसका संबंध न केवल संस्कृत बल्कि सामयिक बोली से भी था। पाणिनि

द्वारा चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में लिखा गया व्याकरण **अष्टाध्यायी** एक लंबी और परिष्कृत व्याकरणिक परंपरा का सोपान है। पाणिनि से पहले अनेक व्याकरण थे लेकिन अष्टाध्यायी की पूर्णता ने उसके पूर्ववर्तियों के नाम को "लुप्त" ही कर दिया।

भाषा के रूप में संस्कृत के सामयिक महत्व पर विचार-विमर्श करते हुए एक "जीवित" और "मृत" भाषा और "स्वाभाविक" और "विद्वत" भाषा के बीच अक्सर पृथक्करण किया जाता है। हमें यह याद रखना चाहिए कि अन्य "मृत" भाषाओं की भाँति संस्कृत मृत नहीं है। यह एक विद्वत्तापूर्ण तथा जीवित भाषा है। आज भी लेखक संस्कृत में गद्य व पद्य रचनाएँ करते हैं।

1.4.2 प्राकृत

संस्कृत शब्द का अर्थ है परिष्कृत (व्याकरणिक) और यह आम लोगों की भाषा प्राकृत (बोली) से भिन्न है। बोलचाल की भाषा को प्राकृत कहा जाता था।

मध्यकालीन आर्य भाषाओं के तीन चरण हैं। पहले चरण का प्रतिनिधित्व पालि करती है। दूसरा चरण "विशुद्ध प्राकृत" का है। तीसरे चरण में महाराष्ट्रीय, शौरसेनी, मागधी और जैन धर्मग्रंथों की विभिन्न बोलियाँ शामिल हैं। प्राकृत में जैन धर्मग्रंथ प्रचुर मात्रा में लिखे गए है। संस्कृत नाटकों में स्त्री पात्रों के संवाद प्राकृत में दिए गए हैं।

1.4.3 पालि

पालि भी बोलचाल की भाषा थी। भगवान बुद्ध ने अपने उपदेश इसी भाषा में दिए हैं। पालि एकमात्र ऐसी भारतीय भाषा है जिसमें प्रारंभिक बौद्ध धर्मग्रंथों को बड़ी संख्या में सुरक्षित रखा गया है जोकि सम्राट अशोक (250 ईसा पूर्व) के शिलालेखों में इस्तेमाल की गई बोलियों से स्पष्ट है। रूपरचना का सरलीकरण पालि की विशेषता है। इसके साथ ही स्वनविज्ञान में भी सरलीकरण हुआ है। स्वरों और व्यंजनों की कमी हो गई है। उदाहरण के लिए, संस्कृत का **त्रैविद्या**, पालि में **तेविज्ज** हो गया है।

1.4.4 अपभ्रंश

अपभ्रंश मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं के विकास में तीसरे चरण का प्रतिनिधित्व करती है। पहली शताब्दी ईसवी के अंत तक मध्य भारतीय-आर्य भाषाओं के लिए प्रयुक्त अपभ्रंश एक व्यापक शब्द था जोकि पुरातन भारोपीय रूपांतरण प्रक्रिया के अंतिम पतन और आधुनिक भारतीय-आर्य भाषाओं – बंगाली, हिंदी, पंजाबी, गुजराती, मराठी इत्यादि – के विकास का पूर्वसूचक है।

1.5 आधुनिक भारतीय भाषाएँ

आधुनिक भारतीय भाषाओं के अंतर्गत यहाँ उन भाषाओं का उल्लेख किया जाएगा जो संविधान की आठवीं सूची में शामिल हैं। संविधान की आठवीं सूची में शामिल होने के मायने है कि इन भाषाओं को प्रमुख आधुनिक भारतीय भाषाओं का दर्जा सांविधानिक रूप से प्राप्त है।

संविधान की 8वीं अनुसूची में 22 भाषाएँ शामिल हैं : हिंदी, उर्दू, मराठी, संस्कृत, सिंधी, कश्मीरी, तमिल, गुजराती, कन्नड़, पंजाबी, तेलुगु, बांग्ला, असमिया, नेपाली, मणिपुरी, कोंकणी, उड़िया, मलयालम, मैथिली, डोगरी, बोडो, संस्थाली।

आगे हम इन भारतीय भाषाओं का संक्षिप्त परिचय देंगे। संस्कृत की चर्चा पिछले भाग में की जा चुकी है इसलिए यहाँ उसका विवरण नहीं देंगे।

1. हिंदी : चीनी और अंग्रेजी के बाद हिंदी तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। यह बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, चंडीगढ़, दिल्ली के अलावा भारत के बाहर मॉरीशस और फीजी आदि कई देशों में भी बोली जाती है। भारत की कुछ अन्य भाषाएँ, जैसे : उर्दू, गुजराती और पंजाबी का हिंदी से निकटस्थ संबंध है। दसवीं शताब्दी ईसा पूर्व से इसे उत्तर भारत में विस्तृत रूप से बोला जाता है। इसकी लिपि देवनागरी है।

2. उर्दू : उर्दू भाषा भारोपीय परिवार की भारत-ईरानी उपशाखा में आती है। आंध्र प्रदेश, बिहार, दिल्ली, जम्मू, कश्मीर व फिजी में इसके बोलने वाले बड़ी संख्या में हैं। इस्लाम के प्रसार से उर्दू के प्रयोग को बढ़ावा मिला। इसे पूर्वी पंजाब (पाकिस्तान), पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बोला जाता है। यह जम्मू-कश्मीर

की राजभाषा है। पाकिस्तान में भी बड़ी तादाद में लोगों द्वारा बोली जाती है और वहाँ इसे राजभाषा का दर्जा मिला है।

उर्दू लिपि अरबी लिपि का संशोधित रूप है। इसे दाईं से बाईं ओर लिखा जाता है। इसका संबंध फारसी से भी है।

ऐतिहासिक रूप से उर्दू का विकास दिल्ली सल्तनत और मुगल साम्राज्य के दौरान अपभ्रंश पर फारसी, अरबी और तुर्की प्रभाव से हुआ। उर्दू की तुलना अक्सर हिंदुस्तानी से की जाती है। दोनों के बीच मुख्य अंतर यह है कि आम उर्दू मूल रूप से फारसी-अरबी लिपि पर आधारित नस्तालिक लिपि में लिखी जाती है और इसकी शब्दावली मुख्यतः फारसी और अरबी से आई है। जबकि हिंदी को देवनागरी लिपि में लिखा जाता है और इसकी शब्दावली पर संस्कृत का अत्यधिक प्रभाव है। कुछ भाषाविज्ञानी उर्दू और हिंदी को एक ही भाषा के दो मानकीकृत रूप मानते हैं जबकि अन्य सामाजिक-भाषाई अंतर के चलते इन्हें दो अलग भाषाएँ मानते हैं। उर्दू और हिंदी में समानता के कारण दोनों भाषाओं के बोलने वाले अक्सर एक-दूसरे को समझ लेते हैं। लेकिन सामाजिक-राजनीतिक कारणों के चलते इन्हें दो अलग भाषाएँ माना जाता है। उत्तर भारत में उर्दू मुख्यतः मुस्लिम बहुल इलाकों में बोली जाती है।

3. मराठी : मराठी महाराष्ट्र की राजभाषा है। यह हजार से भी अधिक वर्षों से अस्तित्व में है। इस पर संस्कृत का अत्यधिक प्रभाव है और इसकी शब्दावली में अरबी, फारसी और अंग्रेजी के अनेक शब्द हैं। इसकी लिपि देवनागरी है। मुंबई जैसे बंदरगाह के समीप होने के कारण इसमें विदेशी भाषा के अनेक शब्द हैं।

4. सिंधी : सिंधी भाषा सिंध में बोली जाती है। सिंधी की शब्दावली पर बलूची व ब्राहुई का प्रभाव है। इस भाषा को बोलने वाले कुछ संख्या में महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात व दिल्ली में भी हैं। सिंधी के लिए देवनागरी, लंदा व फारसी का प्रयोग किया जाता है। कई विद्वानों का मत है कि सिंधी प्राचीन मोहनजोदड़ो की भाषा की प्रशाखा है। इस भाषा का 4.1 करोड़ पाकिस्तानी और 1.2 करोड़ भारतीय प्रयोग करते हैं। पूरे विश्व (पाकिस्तान, हांगकांग, ओमान, फिलीपीन्स, सिंगापुर, संयुक्त अरब अमीरात, ब्रिटेन, अमेरिका इत्यादि) में फैला सिंधी समुदाय भी इस भाषा को बोलता है।

सिंधी भाषा में काफी संख्या में सूफी काव्य की रचना हुई है।

5. कश्मीरी : कश्मीरी भाषा जम्मू और कश्मीर की दो प्रमुख भाषाओं में से एक है, दूसरी भाषा उर्दू है। इसे 50 लाख लोग बोलते हैं। इसकी उत्पत्ति भारत-ईरानी है और इसका हिंदी और पंजाबी से संबंध है। कुछ भाषाविद् इसे दरद भाषा समूह का हिस्सा मानते हैं जो भारत-ईरानी का एक उप-समूह है। अन्य लोगों का मत है कि अन्य भारतीय-आर्य भाषाओं की भाँति कश्मीरी का विकास भी भारोपीय परिवार से हुआ। वे इसे हिंदी या पंजाबी की भाँति एक अन्य भारतीय-आर्य भाषा मानते हैं।

कश्मीरी के अंतर्गत दो महत्वपूर्ण बोलियाँ आती हैं – संस्कृतनिष्ठ बोली और फारसीनिष्ठ बोली।

कश्मीर में कश्मीरी भाषी क्षेत्र को तीन क्षेत्रों में विभक्त किया गया है। एक क्षेत्र श्रीनगर और उसके आसपास का क्षेत्र है। इस क्षेत्र में बोली जाने वाली कश्मीरी को प्रामाणिक माना जाता है जिसका साहित्य व समाचार प्रसार में व्यापक प्रयोग किया जाता है।

कश्मीरी न ही राजभाषा है, न ही शिक्षा का माध्यम। इसलिए इसकी प्रशासनिक और राजकीय भूमिकाएँ सीमित हैं।

हालाँकि कश्मीरी में काव्य रचनाओं की लंबी परंपरा है लेकिन गद्य में इसे हाल ही में प्रयोग किया जाने लगा है।

कश्मीरी के लिए विभिन्न लेखन लिपियाँ प्रयोग में लाई जाती हैं। मुख्य लिपियाँ हैं -- शारदा, देवनागरी, रोमन एवं फारसी-अरबी। अतिरिक्त ध्वनिसूचक चिह्नों के साथ फारसी-अरबी लिपि को कश्मीर सरकार ने मान्यता दी है। इसलिए अब इसका विस्तृत प्रयोग किया जाता है। कश्मीरी की अधिकांश पुस्तकें अब इसी लिपि में छपती हैं।

6. तमिल : तमिलनाडु की राजभाषा तमिल द्रविड़ परिवार की भाषा है। इसका 2000 वर्ष पुराना इतिहास है। इसके बोलने वाले श्रीलंका, मलयेशिया (जहाँ इसे आधिकारिक भाषा माना जाता है),

सिंगापुर और दक्षिण अफ्रीका में बड़ी संख्या में रहते हैं! भारत सरकार ने हाल ही में इसे शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया है। तमिल भाषा में संस्कृत की बहुत कम शब्दावली है। तमिल का मलयालम से अंतरंग संबंध है जिसकी उत्पत्ति पूर्व मध्यकालीन तमिल से हुई।

7. गुजराती : गुजराती भाषा भारोपीय भाषा-परिवार की आर्य शाखा में आती है। यह मुख्यतः पश्चिमी भारत के गुजरात राज्य में बोली जाती है। इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश के नागर रूप से हुआ है। गुजराती और राजस्थानी में कई समानताएँ हैं। गुजराती बोलने वालों की संख्या 4 करोड़ से अधिक हे। गुजराती-भाषी लोग बहुत बड़ी संख्या में विदेशों में भी रहते हैं, विशेषकर दक्षिण अफ्रीका में। नरसी मेहता से लेकर आधुनिक काल तक गुजराती में श्रेष्ठ साहित्य लिखा गया है। प्राकृत भाषाओं के प्रसिद्ध व्याकरण शब्दानुशासन के रचनाकार आचार्य हेमचंद्र (12 वीं शताब्दी) गुजरात के ही रहने वाले थे।

8. कन्नड़ : कन्नड़ भाषा द्रविड़ भाषा-परिवार की दक्षिणी शाखा की भाषा है। यह मुख्यतः दक्षिणी भारत के कर्नाटक राज्य में बोली जाती है। कन्नड़ बोलने वालों की संख्या 4 करोड़ से अधिक है। कन्नड़-भाषी लोग काफी संख्या में पड़ोस के राज्यों (आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र और तमिलनाडु) में भी रहते हैं। प्राचीन कन्नड़ और प्राचीन तमिल में काफी समानताएँ हैं। कन्नड़ की लिपि तेलुगु की लिपि से बहुत अधिक मिलती है। कन्न्ड़ साहित्य की अविरल परंपरा 500 ईसवी से चली आ रही है।

9. पंजाबी : पंजाबी भाषा भारोपीय भाषा-परिवार की आर्य शाखा में आती है। यह मुख्यतः उत्तरी भारत के पंजाब राज्य में बोली जाती है। इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश के नागर रूप से हुआ है। पंजाबी और डोगरी में कई समानताएँ हैं। पंजाबी बोलने वालों की संख्या ढाई करोड़ से अधिक है। पंजाबी-भाषी लोग बहुत बड़ी संख्या में पाकिस्तान में भी रहते हैं। भारत और पाकिस्तान से बाहर अन्य देशों में भी, विशेषकर कनाडा में, पंजाबी-भाषी लोग बहुत बड़ी संख्या में बसे हुए हैं। पंजाबी की लिपि गुरमुखी कहलाती है।

10. तेलुगु : तेलुगु द्रविड़ भाषा-परिवार की दक्षिणी शाखा की भाषा है। यह मुख्यतः दक्षिणी भारत के आंध्र प्रदेश राज्य में बोली जाती है। तेलुगु बोलने वालों की संख्या लगभग साढ़े सात करोड़ है। तेलुगु की लिपि कन्नड़ की लिपि से बहुत अधिक मिलती है। तेलुगु साहित्य की अविरल परंपरा तीसरी शताब्दी से चली आ रही है। द्रविड़ भाषा-परिवार की दक्षिणी शाखा की अन्य भाषाओं की अपेक्षा तेलुगु का प्राकृतों तथा आधुनिक आर्य भाषाओं के साथ अधिक निकट का संबंध है।

11. बांग्ला : असमिया, उड़िया और मैथिली की भाँति बांग्ला भाषा का उद्भव भी पूर्वी प्राकृत से हुआ जोकि भारतीय-आर्य भाषाओं की एक प्रशाखा थी। बांग्ला भाषी लंबे समय तक विदेशी प्रभाव में रहे थे, इसलिए बांग्ला भाषा की शब्दावली, भाव और अलंकरण में गैर आर्य तत्व काफी मात्रा में देखे जाते हैं।

बांग्ला भाषा पश्चिम बंगाल, बांग्लादेश और असम व बिहार के कुछ हिस्सों में बोली जाती है। माना जाता है कि 10वीं शताब्दी में इसका उद्भव हुआ। बांग्ला भाषा के इतिहास को तीन क्रमिक कालों में विभाजित किया जाता है : सन् 950-1350 ईसवी, सन् 1350-1800 ईसवी और 1800 ईसवी से वर्तमान समय तक। बांग्ला भाषा की लिपि का उद्भव 7वीं शताब्दी में पूर्वी ब्राह्मी से हुआ।

सन् 1971 की जनगणना के अनुसार पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा, असम के कछार जिले और कुछ अन्य क्षेत्रों में 3.3 करोड़ से अधिक बांग्ला भाषी हैं।

12. असमिया : असमिया भाषा भारतीय-आर्य भाषा परिवार का हिस्सा है जिसे ब्रह्मपुत्र घाटी में 90 लाख से ज्यादा लोग बोलते हैं। उड़िया और बांग्ला की भाँति असमिया की उत्पत्ति भी प्राच्य (पूर्वी) अपभ्रंश से हुई। यह असम की राजभाषा है। इसका बांग्ला से निकटस्थ संबंध है; दोनों की लिपियाँ भी लगभग समान हैं। असमिया की शब्दावली भी अधिकांशतः संस्कृत व कुछ अन्य भारतीय और विदेशी भाषाओं, जैसे हिंदी, गुजराती, मराठी, फारसी, अंग्रेजी और पुर्तगाली से ली गई है। इसका साहित्य अत्यंत समृद्ध है।

असम के लोग अपनी भाषा को असमिया कहते हैं। असमिया भाषा को मेघालय, नागालैंड और अरुणाचल प्रदेश में अनेक लोग बोलते हैं। अरुणाचल में अलग-अलग भाषाएँ बोलने वाले लोगों के बीच असमिया आपसी संपर्क की भाषा बन गई है। नागालैंड में असमिया का एक मिला-जुला रूप ही आम बोलचाल की भाषा है जिसे Assamese की तर्ज पर नागामीज़ (Nagamese) कहा जाता है।

13. नेपाली : नेपाली भाषा भारतीय-आर्य परिवार की भाषा है। इसकी उत्पत्ति खस प्राकृत से हुई जो गोरखा राजा राम शाह के शासनकाल में गोरखाली के नाम से जानी गई। गोरख, उत्तर पश्चिम काठमांडू से 10 मील दूर एक शहर है। गोरखा शब्द गोरखनाथ से लिया गया है जो नेपाल के शाही परिवार के कुल देवता थे।

खस-कुरा (खस जनजाति की भाषा) को भारत से नेपाल लाया गया और यह मुख्यतः देश के गोरखा शासकों की भाषा है। परंपरानुसार 12वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में खस राजा मुकुंद सेन के साथ नेपाल आए।

खस भाषा को विभिन्न नाम दिए गए। यूरोपियों ने इसे नेपाली कहा जिसका अर्थ है नेपाल की भाषा। नेपाल के लोग भी इसे खस-कुरा या खसों की भाषा कहते हैं। इसे गोरखाली (गोरखाओं की भाषा) भी कहते हैं, नेपाल के राजपूत शासक मूलतः गोरख शहर से आए। इसे पर्वतिया या पहाड़ी भी कहा जाता है। अब नेपाल सरकार ने नेपाली नाम निर्धारित कर दिया है। देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली नेपाली वहाँ की राष्ट्रभाषा है। साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ने नेपाली भाषा को भारत की एक आधुनिक साहित्यिक भाषा के रूप में मान्यता दी है।

नेपाल के अलावा भारत के पड़ोसी हिस्सों में भी नेपाली बोली जाती है : हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, पश्चिम बंगाल, मेघालय, सिक्किम, नागालैंड और अरुणाचल प्रदेश में। पिछली शताब्दी में नेपाली में साहित्यिक रचनाएँ आरंभ हुईं।

14. मणिपुरी : तिब्बती-चीनी परिवार की भाषा, मणिपुरी मणिपुर राज्य की राजभाषा है। यह तिब्बती-बर्मी शाखा की भाषा है जिसे असम, त्रिपुरा, बांग्लादेश, म्याँमार (बर्मा) इत्यादि के अनेक हिस्सों में भी बोला जाता है।

मणिपुरी बोलने वाले इसे ईमार थार भी कहते हैं जिसका अर्थ है "मेरी माँ" की भाषा। ये स्वयं को और अपनी भाषा को मणिपुरी कहते हैं और विष्णुप्रिया शब्द प्रयुक्त कर स्वयं को मणिपुर की अन्य मानव जातियों से अलग दिखाने के लिए "इया" प्रत्यय लगाते हैं जिसका अर्थ है "विष्णुपुर के लोग"।

मणिपुरी की मूल शब्दावली संस्कृत के तद्भव शब्दों एवं अन्य भारतीय भाषाओं से बनी है। इसके पश्चात उसी भाषा से हजारों तत्सम शब्द मणिपुरी में आए। इसके अलावा इस क्षेत्र में बोली जाने वाली मूल भाषाओं या फिर मेइतेई, अंग्रेजी व फारसी-अरबी से भी हजारों शब्द उधार लिए गए। इसकी लिपि बांग्ला के समान है।

15. कोंकणी : कोंकणी भाषी मुख्यतः गोवा राज्य में हैं। इसे महाराष्ट्र के कुछ भागों में भी बोला जाता है। इसकी लिपि देवनागरी है। सन् 1992 में कोंकणी को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा दिया गया और इसे संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल किया गया। माना जाता है कि कोंकणी की उत्पत्ति सरस्वती बालसभा से हुई।

16. उड़िया : उड़िया भाषा उड़ीसा की राजभाषा है। इस पर शौरसेनी का भी प्रभाव है जिसका बांग्ला और असमिया से घनिष्ठ संबंध है। सातवीं शताब्दी में उड़िया एक पृथक भाषा बन गई।

17. मलयालम : मलयालम द्रविड़ परिवार की भाषा है। इसका एक हजार साल से भी पुराना इतिहास है। यह मध्ययुग पूर्व तमिल आदि द्रविड़ की प्रशाखा है। इसे नारियलों के प्रदेश केरल में बोला जाता है। मलयालम शब्द की उत्पत्ति इस प्रकार है : **मालः** "पर्वत", **आलम** : "गड्ढा/सागर"। यह पर्वत और सागर के बीच के भौगोलिक क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा है। बारहवीं शताब्दी से इसमें काफी रचनात्मक साहित्य का सृजन हुआ है। मलयालम साहित्य पर संस्कृत का काफी प्रभाव है। इसकी मणिप्रवालम नामक एक विशिष्ट शैली भी है जो संस्कृत और मलयालम का मिश्रण है। मलयालम में फ़ारसी, अरबी, फ्रांसीसी, अंग्रेजी और हिब्रू जैसी अनेक विदेशी भाषाओं की समृद्ध शब्दावली है क्योंकि समुद्रतट के समीप होने के कारण यहाँ पर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और वाणिज्य और ईसाई, मुसलमान एवं यहूदियों जैसे विदेशी धर्म-प्रचारकों के आवागमन में आसानी होती थी।

18. मैथिली : मैथिली भारोपीय भाषा-परिवार की आर्य शाखा में आती है। यह मुख्यतः उत्तरी भारत के बिहार राज्य के उत्तर-पूर्वी जिलों में बोली जाती है। मैथिली और बांग्ला में कई समानताएँ हैं। मैथिली बोलने वालों की संख्या एक करोड़ से अधिक है। कुछ लोग मैथिली भाषियों की संख्या चार करोड़ से अधिक मानते हैं। मैथिली-भाषी लोग काफी संख्या में पड़ोसी देश नेपाल में भी रहते हैं। मैथिली का

साहित्य 8वीं शताब्दी में रचित चर्यापदों से शुरू होता है। मध्य युग के कवि विद्यापति मैथिली के श्रेष्ठतम कवियों में गिने जाते हैं।

19. डोगरी : डोगरी भाषा मुख्यतः जम्मू और कश्मीर के जम्मू क्षेत्र में 20 लाख लोगों द्वारा बोली जाने वाली भारोपीय भाषा है। इस भाषा को बोलने वाले डोगरा कहलाते हैं और जिस क्षेत्र में यह बोली जाती है वह डुग्गर कहलाता है। डोगरी पश्चिमी पहाड़ी भाषा समूह का हिस्सा है और इसे पहाड़ी कहते हैं।

डोगरी को मूलतः टाकरी लिपि में लिखा जाता था जिसका कश्मीरी की शारदा लिपि और पंजाबी की गुरमुखी लिपि से निकट का संबंध था। लेकिन भारत में इसे आम तौर पर देवनागरी में लिखा जाता है (लेकिन पाकिस्तान में इसे फारसी-अरबी लिपि में लिखा जाता है।

डोगरी को भारत की राष्ट्रीय भाषा के रूप में मान्यता मिली है और इसे संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया है। साहित्य अकादमी ने भी इसे भारत की "एक स्वतंत्र साहित्यिक भाषा" के रूप में मान्यता प्रदान की है।

डोगरी में पुरानी संस्कृत की उप-भाषाओं और खस, यवन, टक्क, गुर्जर और मुगलों द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं के अंश हैं। डोगरी के प्रयोग के प्रमाण 12वीं शताब्दी के शिलालेखों, ताम्रपत्रों, दस्तावेजों, सनद व समझौतों तथा सरकारी और निजी पत्र-व्यवहार में मिलते हैं। डुग्गर भाषा के नाम से लोकप्रिय डोगीर का उल्लेख 1317 में पहली बार अमीर खुसरो ने किया था। डोगरी में लोक साहित्य की अत्यंत समृद्ध परंपरा है।

20. बोडो : बोडो भाषा तिब्बती-चीनी भाषा-परिवार के तिब्बती-बर्मी उप-समूह का हिस्सा है। यह असम-बर्मी समूह के अंतर्गत बोडो समूह की एक प्रमुख भाषा है।

बोडो का असम की दिमासा भाषा और मेघालय की गारो भाषाओं से घनिष्ठ संबंध है। इसका त्रिपुरा में बोली जाने वाली कोकबोरोक भाषा से भी निकट का संबंध है।

21. संथाली : संथाली भाषा ऑस्ट्रो-एशियाई भाषा परिवार के मुंडा उपसमूह का हिस्सा है। इसे भारत में 60 लाख लोग झारखंड, असम, बिहार, उड़ीसा, त्रिपुरा और पश्चिम बंगाल राज्यों में बोलते हैं। इसकी चिकी नामक अपनी वर्णमाला है। इस भाषा को बोलने वाले संथाल कहलाते हैं।

1.6 बोध प्रश्न

बोध प्रश्न 1

1) सही (√) अथवा गलत (×) का निशान लगाकर उत्तर दीजिए :

   क) एक ही परिवार की भाषाओं का विकास जिस आदि भाषा से हुआ होगा उसे प्राग्-भाषा कहा जाता है।

   ख) यूनानी शाखा यूरालिक भाषा-परिवार में आती है।

   ग) ची नी-तिब्बती परिवार की भाषा बर्मी म्यॉंमार में बोली जाती है।

   घ) भाषा-परिवार की अवधारणा भाषाओं के प्ररूपात्मक वर्गीकरण पर आधारित है।

2) भाषा-परिवार की संकल्पना के संदर्भ में "लहर सिद्धांत" और "वंशवृक्ष सिद्धांत" का अर्थ स्पष्ट कीजिए। अपना उत्तर 8-10 पंक्तियों की सीमा में दीजिए।

   ....
   ....
   ....
   ....
   ....
   ....
   ....
   ....
   ....
   ....

3) सही विकल्प का चयन कीजिए :

क) लैटिन, फ्रांसीसी, स्पैनिश, इतालवी भाषाएँ .... भाषाएँ कहलाती हैं। (यूनानी/रोमांस)

ख) स्लाव भाषाएँ .... भाषा-परिवार में आती हैं। (भारोपीय/अल्ताइ)

ग) द्रविड़ परिवार की भाषाएँ मुख्यतः भारत के .... हिस्सों में बोली जाती हैं। (दक्षिणी/पश्चिमी)

घ) भाषाओं का पारिवारिक वर्गीकरण .... प्रणाली के द्वारा किया जाता है। (उत्पत्तिमूलक/प्ररूपमूलक)

बोध प्रश्न 2

1. सही (√) अथवा (×) गलत का निशान लगाकर उत्तर दीजिए।

   क) अरबी भाषा भारत-ईरानी शाखा की भाषाओं में गिनी जाती है।

   ख) उड़िया भाषा द्रविड़ भाषा-परिवार में आती है।

   ग) बर्मी भाषा चीनी-तिब्बती भाषा-परिवार में आती है।

   घ) अधिकांश बौद्ध ग्रंथ पालि भाषा में लिखे गए हैं।

   ङ) अधिकांश जैन ग्रंथ अपभ्रंश भाषा में लिखे गए हैं।

2. प्राकृत, पालि और अपभ्रंश का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

   ....
   ....
   ....
   ....

3. संविधान की 8वीं अनुसूची में सम्मिलित भाषाओं के नाम बताइए।

   ....
   ....
   ....
   ....

4. सही विकल्प का चयन कीजिए-

   क) कश्मीरी भाषा .... में बोली जाती है। (श्रीनगर/जम्मू)

   ख) .... की उत्पत्ति मध्यकालीन तमिल से हुई है। (तेलुगु/मलयालम)

   ग) पाणिनि ने अष्टाध्यायी नाम से .... का व्याकरण लिखा है। (संस्कृत/प्राकृत)

   घ) मणिपुरी .... परिवार की भाषा है। (तिब्बती-चीनी/द्रविड़)

   ङ) संथाली .... परिवार की भाषा है। (ऑस्ट्रो-एशियाई/भारोपीय)

1.7 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने पढ़ा कि भाषा-परिवार क्या है और भाषाओं को परिवार के भीतर किस आधार पर शामिल किया गया है। आपने विभिन्न भाषा परिवारों का संक्षिप्त परिचय भी प्राप्त किया है। साथ ही प्राचीन और आधुनिक भारतीय भाषाओं के विषय में संक्षिप्त जानकारी भी प्राप्त की। भारत का भाषाई परिदृश्य अब आपके समक्ष है। यहाँ की विभिन्न भाषाओं के बीच निकटता और दूरी के बुनियादी आधारों की जानकारी आपको मिल गई है।

1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. क) √

   ख) ×

   ग) √

   घ) ×

2. भाषा-परिवार की संकल्पना के संदर्भ में दो सिद्धांत प्रचलित है - "लहर सिद्धांत" और "वंशवृक्ष सिद्धांत"।

लहर-सिद्धांत : जिस तरह पानी में पत्थर फेंकने से उसमें बनी लहरें दूर तक चली जाती हैं और दूर वाली लहरों का मूल लहर से दूर का संबंध होता है, उसी तरह एक ही परिवार की भाषाओं में निकट और दूर के संबंधों की कल्पना की गई है।

वंशवृक्ष सिद्धांत : जिस तरह एक ही वंश के परिवारों और उनकी संतानों का आपस में निकट और दूर का संबंध होता है, उसी तरह एक ही भाषा-परिवार की विभिन्न शाखाओं और उपशाखाओं की भाषाओं में निकट और दूर का संबंध होता है।

3. क) रोमांस

ख) भारोपीय

ग) दक्षिणी

घ) उत्पत्तिमूलक

बोध प्रश्न 2

1. क) ×

ख) ×

ग) √

घ) √

ड.) ×

2. **प्राकृत** : प्राचीनकाल में बोलचाल की भाषा को प्राकृत कहा जाता था जो परिष्कृत संस्कृत से कुछ भिन्न थी। प्राकृत में जैन धर्मग्रंथ प्रचुर मात्रा में लिखे गए हैं।

पालि : पालि भी बोलचाल की भाषा थी। इसमें बौद्ध धर्मग्रंथ प्रचुर मात्रा में लिखे गए हैं। इसकी मुख्य विशेषता है इसके व्याकरण की सरलता।

अपभ्रंश : मध्यकालीन आर्य भाषाओं का विकास अपभ्रंश के रूप में हुआ। विभिन्न अपभ्रंशों से ही आधुनिक आर्य भाषाओं का विकास हुआ है।

3. हिंदी, उर्दू, मराठी, संस्कृत, सिंधी, कश्मीरी, तमिल, गुजराती, कन्नड़, पंजाबी, तेलुगु, बांग्ला, असमिया, नेपाली, मणिपुरी, कोंकणी, उड़िया, मलयालम, मैथिली, डोगरी, बोडो और संथाली।

4. क) श्रीनगर

ख) मलयालम

ग) संस्कृत

घ) चीनी-तिब्बती

ड.) ऑस्ट्रो-एशियाई